International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा-साहित्य और ग्रामीण जीवन

Dr. Dwarka Prasad Meena

Associate Professor, Dept. of Hindi, SNMT Govt. Girls College, Jhunjhunu, Rajasthan, India

सार

भारत-जैसे कृषि प्रधान देश के लिए ,जहाँ लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि व्यवसाय में संलग्न है, ग्राम जीवन के अध्ययन की आवश्यकता बढ़ जाती है । देश की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अध्ययन के लिए भी ग्राम जीवन के अध्ययन की आवश्यकता होती है। बदलते हुए परिवेश में गाँव क्या रूप ग्रहण कर रहा है? उसका भावी स्वरूप क्या होगा? इन सभी बातों का अध्ययन आवश्यक है। ग्रामीण समाजशास्त्री ग्रामीण समाज के अध्ययन के लिए क्षेत्रीय और प्रलेखकीय स्त्रोतों का आश्रय लेता है। साहित्य के प्रलेखकीय स्त्रोतों में उपन्यास में जीवन का व्यापक चित्रण होता है। अतः ग्रामीण समाजशास्त्री ग्रामीण जीवन के अध्ययन के लिए ग्रामजीवन पर आधारित उपन्यासों का आश्रय ग्रहण करता है। इस आलेख में प्रेमचंद युग से आठवें दशक तक हिंदी उपन्यासों में चित्रित ग्राम्य जीवन को पांच कालों में विभक्त करके संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

परिचय

हिंदी उपन्यास का आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से माना जाता है। हिंदी के आरम्भिक उपन्यास अत्यंत काल्पनिक थे।"भारतेंदु काल में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी-ऐयारी, जासूसी तथा रोमानी उपन्यासों की रचना-परंपरा का सूत्रपात हुआ। यह परंपरा आगे चलकर द्विवेदी युग में अधिक विकसित और पुष्ट हुई ।"1
सामाजिक जीवन की यथार्थ समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखने की परंपरा प्रेमचंद युग से आरंभ हुई।
प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यासों में अंकित ग्राम जीवन
प्रेमचंदयुग का समय 1918 से 1936 ई. तक माना जाता है। प्रेमचंदयुग में ग्राम जीवन पर प्रेमचंद के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद, सियारामशरण गुप्त, शिवपूजन सहाय, वृंदावनलाल वर्मा आदि ने प्रमुख या गौण रूप से लेखनी चलाई है। प्रेमचंद के ग्राम जीवन से संबंधित उपन्यासों में प्रमुख रूप से 'प्रेमाश्रम'।1922।, 'रंगभूमि' ।1925।, कर्मभूमि'।1933। ,'गोदान' ।1936। का नाम लिया जाता है। प्रेमचंद के अतिरिक्त शिवपूजनसहाय के 'देहातीदुनिया' ।1926।, वृंदावनलाल वर्मा के 'लगन'।1929।, सियारामशरणगुप्त के 'गोद'।1932।, 'अंतिम आकांक्षा'।1934।, जयशंकरप्रसाद के 'तितली'।1934। आदि उपन्यासों में भी ग्राम जीवन अंकित हुआ है ।[1]
इस युग के उपन्यासों में ग्राम जीवन के सामाजिक पक्ष के अंतर्गत समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया गया है। 'गोदान' में उच्च वर्ग के अंतर्गत जमींदार रायसाहब , पंडित दातादीन, सहुआइन, महाजन, झिंगुरीसिंह आदि आते हैं । इसी प्रकार 'तितली' में जमींदार इंद्रजीतकुमार, रंगभूमि' में पूँजीपति जानसेवक, 'देहातीदुनिया'' में जमींदार रामटहलहसिंह आदि उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व 'गोदान' उपन्यास का नायक होरी प्रमुख रूप से करता है जो उच्चवर्ग के शोषण के कारण किसान से मजदूर बन जाता है और अपनी छोटी सी अपूर्ण इच्छा, गाय खरीदने की इच्छा लिए मर जाता है ।
इस युग के उपन्यासों में ग्राम जीवन के सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत उच्चवर्ग के लोगों द्वारा निम्नवर्ग के शोषण का प्रमुख रूप से चित्रण हुआ है । 'प्रेमाश्रम'का गौसखाँ, 'तितली'का तहसीलदार ऐसे ही कारिन्दे हैं । इसी तरह 'कायाकल्प' उपन्यास में राजा विशालसिंह से अधिक उनके मुन्शी और कारिन्दे गाँववाले पर अत्याचार करते हैं। "गालियाँ और ठोंक पीट तो साधारण सी बात थी, किसी के बैल खोल लिए जाते थे, किसी की गाय छीन ली जाती थी, किसानों के खेत कटवा लिए गये।"2
शोषण के अतिरिक्त प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में अन्य सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण हुआ है । जैसे - छूआछूत, मूल्यहीनता, अनैतिक यौन समस्याएँ, ग्रामीणों के पारस्परिक वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट, जुआ, शराबखोरी इत्यादि। 'प्रेमाश्रम' में पारिवारिक समस्या के अंतर्गत संयुक्त परिवार विघटन का चित्रण हुआ है । जमींदार ज्ञानशंकर पारिवारिक झगड़े तथा स्वार्थ के कारण अपने चाचा प्रभाशंकर के परिवार से अलग हो जाता है। 'गोदान' में सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत अछूतों की समस्या, दहेज समस्या, अनमेल विवाह, किसानों का शोषण, संयुक्त परिवार विघटन आदि समस्याओं का चित्रण हुआ है । 'रंगभूमि'उपन्यास में सरल ग्रामीण संबंधों के स्थान पर छल, कपट, जुआ, शराबखोरी को प्रोत्साहन है।'देहाती दुनिया'में भी गाँव में धोखा, फरेब, सास-बहू के झगड़े आदि का चित्रण है। 'तितली'उपन्यास में ग्रामीण जनता की निर्धनता, सरलता, स्वार्थपरता, दुर्बलता पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है।'अंतिम आकांक्षा'में गाँव के डाके में मुखिया, थानेदार, तहसीलदार का शामिल होना ,गरीबों पर अत्याचार तथा ग्रामीण जीवन की अंधपरम्परा जातिभेद का चित्रण है।[2]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में जहाँ ग्राम्य-जीवन में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का व्यापक चित्रण किया गया है वहीं इन समस्याओं के प्रति धीरे-धीरे विरोध का भी चित्रण हुआ है। इस युग के कई उपन्यासों में किसानों द्वारा अपने शोषकों के विरूद्ध आवाज उठाई गई है जो उस युग के गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के प्रभाव का फल था। 'प्रेमाश्रम' उपन्यास के किसान बलराज अपने पसीने की कमाई के आगे जमींदार को भी कुछ नहीं समझता और कहता है, "जमींदार कोई बादशाह नहीं है कि चाहे जितनी जबरदस्ती करें और हम मुँह न खोलें। इस जमाने में तो बादशाह का भी इतना अख्तियार नहीं, जमींदार किस गिनती में हैं ।"3 'रंगभूमि' उपन्यास में अंधा भिखारी सूरदास अपने अधिकार के लिए पूँजीपति जानसेवक से अंत तक संघर्ष करता है । गोदान' में समाज की परवाह किए बिना होरी और धनिया बिन ब्याही माँ बनी झुनिया और सिलिया को शरण देते हैं ।'कर्मभूमि' में नायक अमरकांत द्वारा गाँव की निम्न जातियों में जागृति का प्रयास किया जाता है । अमरकांत के सहयोग से गाँव मे अस्पृश्यता निवारण, मद्यपान निषेध, मुर्दा मांस निषेध, सफाई शिक्षा प्रसार आदि पर बल दिया गया है

प्रेमचंदोत्तरयुगीन उपन्यासों में अंकित ग्रामीण जीवन ।193ऱ्6 इ. से 1950 ई.तक। प्रेमचंदोत्तर युग मंे मनौवेज्ञानिक उपन्यास धारा के साथ ही इस युग में ऐतिहासिक उपन्यास भी पर्याप्त मात्रा में लिखे गए। यही कारण है कि प्रेमचंदयुग के बाद से लेकर स्वतंत्रता की प्राप्ति तक हिन्दी में ग्राम जीवन पर अधिक उपन्यास नहीं लिखे गए। जो लिखे भी गए वे अधिक चर्चित नहीं हुए।

प्रेमचंदोत्तर जिन उपन्यासों में सीमित व विस्तृत रूप में ग्राम जीवन का अंकन हुआ है वे हैं 'नारी'-सियारामशरण गुप्त-1937 ,'सुघर गंवारिन'- लाला रामजीलाल वैश्य-1938, 'विसर्जन'-त्रिवेणी प्रसाद-1939, 'जूनिया'-गोविंदवल्लभ पंत -1940 ,'गरीब'-जगदीश झा विमल-1941 ,'जमींदार' -प्रो. इंद्र विद्यावाचस्पति-1942, 'जी जी जी'-पांडेय बेचनशर्मा उग्र-1943, 'अंतिम बेला'-ओंकार शरद-1945, 'महाकाल'अमृतलाल नागर-1947 आदि ।

'विसर्जन', 'जमींदार', 'उसपार', 'सुघर गंवारिन', 'गरीब' आदि उपन्यासों में जमींदार द्वारा किसान तथा निम्न जाति के लोगों पर अत्याचार किया जाता है ।

इस युग के उपन्यासों के ग्रामीण समाज में छुआछूत, प्रेम समस्या , अनमोल विवाह, विमाता समस्या, बहु पर ससुरालवालों का अत्याचार, नारी की विवशता आदि समस्याओं का चित्रण हुआ है । 'नारी' उपन्यास में जमुना के माध्यम से एक असहाय एवं विवश भारतीय नारी का चित्रण किया गया है । जी जी जी' उपन्यास में गाँव के समाज जीवन में अनमेल विवाह के दुष्परिणाम का चित्रण हुआ है ।

जुनिया' में कुमाऊँ के दीन, भूमिहीन समाज द्वारा शोषित डूर्मा ।अछूत। जाति की कथा है, जिसमें उच्च जाति के गुसाई वर्ग द्वारा निम्न जाति के डूर्मा से छुताछूत के व्यवहार के साथ-साथ उन पर अत्याचार किया जाता है । 'जूनिया' उपन्यास में डूमा जाति की जूनिया गुसाई वर्ग के अत्याचार के प्रति विद्रोह करती है ।'नारी' उपन्यास में पति द्वारा परित्यक्त निम्नवर्ग की जमुना पुनर्विवाह करने की ओर प्रेरित होती है । उसके इस पुनर्विवाह में उसके पुत्र हल्ली की भी सहमति है । सामाजिक अन्याय के विरूद्ध नई पीढ़ी के इस विद्रोह को गुप्त जी ने बड़ी मार्मिकता से उभारा है ।[3]

छठे दशक के उपन्यासों में ग्राम जीवन का अंकन

छठे दशक के उपन्यासों में विशेषकर आँचलिक उपन्यासों में ग्राम जीवन का अंकन अधिक मात्रा में हुआ है। प्रमुख आँचलिक उपन्यासकारों में नागार्जुन , फणीश्वरनाथ रेणु , भैरवप्रसाद गुप्त, उदयशंकर भट्ट, वृंदावनलाल वर्मा आदि ने भी इस दशक में ग्राम-जीवनपरक उपन्यास लिखे हैं ।

'बलचनमा' उपन्यास में नागार्जुन ने मिथिला के ग्रामीण जीवन में देहात के भूमिजीवी श्रमिक के एक लड़के बलचनमा को विभिन्न परिस्थितियों में डालकर, सर्वहारा वर्ग की दलित एवं दयनीय अवस्था का यथार्थ चित्रण किया है । इस दशक के अधिकांश उपन्यासकारों ने नारी की दयनीय दशा का चित्रण किया है । नारी की यह दयनीय दशा कहीं विधवा के रूप में दिखाई गई है तो कहीं दहेज प्रथा के कारण अनमेल विवाह के रूप में । नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास की चाची, 'दुखमोचन' उपन्यास की विधवा माया तथा भैरवप्रसाद गुप्त की 'गंगा-मैया' उपन्यास के गोपी की भाभी विधवा विवाह की समस्या से ग्रस्त थी । विधवा समस्या के साथ नागार्जुन ने अपने उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' में दहेज प्रथा के दुखद परिणाम के फलस्वरूप अनमेल विवाह की समस्या को भी उठाया है ।

औद्योगिकीकरण तथा नगरीय प्रभाव के कारण ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार का विघटन प्रारंभ हो गया है "परती-परिकथा'।फणीश्वरनाथ रेणु। उपन्यास में संयुक्त परिवारों की टूटन व्याप्त है । इस टूटन के पीछे मुख्यतः आर्थिक कारण ही है, बाकी अन्य सामाजिक कारण गौण है ।

इस दशक के उपन्यासकारों ने ग्राम जीवन में व्याप्त सामाजिक समस्याओं में सुधार लाने का प्रयास अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है । नागार्जुन, भैरवप्रसाद गुप्त आदि ने अपने उपन्यास की विधवा नारी की समस्या का समाधान उनके पुनःर्विवाह के रूप में दिखाया है ।'दुखमोचन' ।नागार्जुन। उपन्यास में गाँव का माहे अन्य युवकों को मिलाकर एक संगठन बनाता है । वे गाँव की लड़की बिसेसरी की शादी बूढ़े के साथ न होने देने के लिए संकल्प करते है तथा उसका विरोध करते हैं ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

'बलचनमा'।नागार्जुन। उपन्यास का नायक बलचनमा ने उच्चवर्ग के हाथों अनेक कष्ट सहे हैं, किंतु अब वह अन्य कष्ट सहने को तैयार नहीं है । वह कहता है, "बेशक! मैं गरीब हूँ, तेरे पास अपार संपदा है , कुल है , खानदान है, बाप-दादे का नाम है, अपनी सारी ताकत तेरे विरोध में लगा दूँगा ।"4

सातवें दशक के हिंदी उपन्यासों में अंकित ग्रामीण जीवन[4]

सातवें दशक के ग्राम जीवन से संबंधित हिंदी उपन्यासों में रामदरश मिश्र कृत 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ'. हिमांशु श्रीवास्तव कृत 'नदी फिर बह चली', राही मासूम रजा कृत 'आधा गाँव', शिवप्रसाद सिंह कृत 'अलग-अलग वैतरणी' श्रीलाल शुक्ल कृत 'राग दरबारी' आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है जिनमें ग्रामीण जीवन का व्यापक चित्रण किया गया है । सातवें दशक के हिंदी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में ग्राम जीवन के आंचलिक परिवेश, ग्रामीणों के रहन-सहन, बनते-बिगड़ते संबंध आदि का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है ।

'राग दरबारी' उपन्यास का शिवपालगंज गाँव स्वातंत्र्योत्तर भारत के विकृत और पतनोन्मुख गाँव का प्रतीक बनकर हमारे समक्ष आता है । 'नदी फिर बह चली' उपन्यास बिहार के छपरा अंचल के संपूर्ण ग्राम परिवेश को अंकित करता है । 'आधा गाँव' उपन्यास में गाजीपुर जिला स्थित गंगौली गाँव के एक हिस्से के शिया मुसलमान परिवारों की परंपरागत मान्यता, विश्वास, जीवन प्रथा, सुख-दुख, प्रेम-घृणा आदि बातों का सूक्ष्मता से अंकन किया गया है । इसी प्रकार 'अलग-अलग वैतरणी' उपन्यास में उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में स्थित करैता गाँव का तथा 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में उत्तर प्रदेश के ही गोरखपुर जिले के पांडेपुर गाँव के ग्रामीण अंचल और उसकी जनता के सुख-दुख, राग-द्वेष, उदारता-संकीर्णता, शक्ति-सीमा, प्रकृति-विकृति का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया गया है।[5]

ग्रामीणों के सरल सामाजिक परिवेश में इस युग में भी जटिल समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं जैसे- संयुक्त परिवार विघटन, वैवाहिक समस्याओं के अंतर्गत बाल विवाह, विधवा विवाह समस्या, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, पति-पत्नी संबंधों में तनाव आदि सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है ।

'जल टूटता हुआ' उपन्यास की बदमी तो उसी उम्र में विवाह के बंधन में फँस गई थी जब उसे यह भी मालूम नहीं था कि शादी-ब्याह का क्या मतलब होता है । बाल विवाह के दुखद परिणामस्वरूव उसे वैधव्य जीवन का भार ढोना पड़ा । 'पानी के प्राचीर' उपन्यास की विधवा गेंदा की स्थिति अत्यंत दयनीय है

इसी तरह 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में जीवन के अभावों में फँसा मास्टर सुग्गन तीन-चार साल से अपनी लड़की के लिए वर की तलाश में व्यस्त है लेकिन कहीं बात जम नहीं पाती। दहेज प्रथा के विषय में सोचता हुआ वह ठीक ही कहता है, "जो लड़का जितना पढ़ा-लिखा मिलता है उसका भाव आज उतना ही तेज है । लगता है आज के समाज के लोगों की शिक्षा और प्रतिष्ठा केवल दहेज लेने तक सीमित है ।"5

शहर की भाँति अब गाँव में भी पति-पत्नी, पिता-पुत्र, भाई-भाई आदि रिश्तों में तनाव दिखाई देने लगा है।'राग दरबारी' उपन्यास में रूप्पन और छोटे पहलवान अपने-अपने पिता के प्रति कटु हैं। 'अलग-अलग वैतरणी'की कनिया का अपने पति बुझारथ सिंह के साथ बड़ा तनावपूर्ण संबंध है।

अब ग्रामीण स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही हैं तथा सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने लगी हैं । नदी फिर वह चली' उपन्यास की अनाथ लड़की परबतिया किसान मजदूर की नेता बनती है और पूँजीवाद के संघर्ष में उनका मार्गदर्शन करती है । 'पानी के प्राचीर' उपन्यास की विधवा गुलाबी अपने पति के मरने के पश्चात् गाँव के बैजू पंडित को अपना बनाती है। ग्रामीण स्त्रियों में शिक्षा के प्रति सजगता भी दिखाई देने लगी है'आधा गाँव' उपन्यास में अग्गूमियाँ की लड़की सईदा तथा 'पानी के प्राचीर' की संध्या अधिक पढ़ाई करने के लिए शहर जाती है ।

गाँव में सामाजिक सुधार आज की पीढ़ी द्वारा ही संभव है । 'पानी के प्राचीर' उपन्यास के पांडेपुर गाँव में सामाजिक विकास लाने हेतु नवयुवक संघ बनाने की ओर प्रेरित होते हैं ।आठवें दशक के हिंदी उपन्यासों में अंकित ग्रामीण जीवन[6]

आठवें दशक के ग्राम जीवन से संबंधित हिंदी उपन्यासों में रामदरश मिश्र का 'सूखता हुआ तालाब, शिवकरणसिंह का अस गाँव पस गाँव' , जगदीशचंद्र का 'धरती धन न अपना', मधुकांत का ' गाँव की ओर' आदि का नाम लिया जा सकता है । आठवें दशक के उपन्यासों में भी ग्रामीण समाज में विविध जातियों का उल्लेख किया गया है।'अस गाँव पस गाँव' उपन्यास के मनोरथपुर गाँव में पाँच पूरे थे और सभी पूरों में विशेष जाति के लोग बसते थे गाँव में ब्राह्मण, क्षत्रिय, हरिजन और अहीर लोगों की संख्या अधिक थी ।

आज भी ग्रामीण समाज में यदि कोई बिरादरी विरूद्ध कार्य करता है तो उसे बिरादरी से बहिष्कृत कर दिया जाता है । 'सुखता हुआ तालाब' उपन्यास में शामलाल और मोतीलाल अपने दुश्मन देवप्रकाश को अपनी आपसी ईर्ष्या के कारण इलजाम लगाकर उसे व उसके परिवार को समाज व जाति से बहिष्कृत कर देते हैं ।

जाति के आधार पर ऊँची जाति के लोग निम्न जातियों पर अत्याचार करते हैं।'धरती धन न अपना' उपन्यास में ऊँची जाति के जमींदार हरिजनों पर अनेक अत्याचार करते हैं । ऊँची जातियों के कुएँ नीच जातियों के कुएँ से दूर होते हैं जहाँ निम्न जाति के लोग पानी नहीं भर सकते ।

ऊँची जातियों के इस शोषण से तंग आकर ही नीच जाति के लोग अपना धर्म परिवर्तन करने पर मजबूर हो जाते हैं । इस उपन्यास मे चमार जाति का नंदसिंह ऊँची जाति के अत्याचार व शोषण से तंग आकर पहले सिक्ख तथा बाद में ईसाई हो जाता है । इस प्रकार की छुआछूत के दृश्य 'सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में भी दिखाई देते हैं ।[7]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह आदि समस्याएँ गाँव में आज भी विराजमान हैं दहेज प्रथा की समस्या का चित्रण ' अस गाँव पस गाँव' उपन्यास में भी किया गया है ।
सामाजिक चेतना की दृष्टि से इस दशक के कई उपन्यासों में वर्ग संघर्ष, बिरादरी बहिष्कार, दहेज प्रथा विरोध आदि का वर्णन किया गया है । सूखता हुआ तालाब' उपन्यास में जब बिरादरी देवप्रकाश को परिवार सहित बहिष्कृत कर देती है तब वह अपने समाज व बिरादरी की परवाह किए बिना स्वच्छंदता से अलग जीवन व्यतीत करता है । 'धरती धन न अपना' उपन्यास में निम्न जाति के लोग कालीचरण के नेतृत्व में जमींदारों से अपने अधिकार के लिए संघर्ष करते हैं ।
'अस गाँव पस गाँव' उपन्यास में जब बबुआन लोग चमारों को धमकी देते हुए अभी मारनेके लिए बढ़ रहे होते हैं, "तब तक बड़कऊ की अगुआई में कई हरिजन बबुआनों पर टूट पड़े और उन्हें सोपाहने लगे । लगता था कि हरिजन आज सूद सवारी समेत जनम भर के अन्याय का बदला चुका लेना चाहते थे । अब तक बबुआन घायल होकर जमीन पकड़ चुके थे और हरिजन उन्हें गाय-गोरू की तरह पीट रहे थे ।"6
इस उपन्यास में गाँव का नवयुवक लल्लू अपने विवाह में बड़े भाइयों द्वारा लड़कीवालों से दहेज की माँग का विरोध करता है[8]

विचार-विमर्श

दलितों के प्रति नागार्जुन की पक्षधरता, नारी के प्रति मर्यादा, यथार्थ का अंकन, अभिव्यक्ति की सहजता उन्हें सहज ही ऊपर उठा देते हैं। बाबा नागार्जुन की कहानियों को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों में से कुछ प्रसंग, कुछ घटनाएँ, चुनकर ही उन्हें, उपन्यासों एवं कहानियों के रूप में वर्णित है। उन्होंने अपनी कुछ कहानियों जैसे- विषम-ज्वर, भूख मर गई थी, ममता, हीरक जयन्ती या कायापलट जेठा आदि कहानियों में ग्रामीण संस्कृति एवं सामाजिक, समस्याओं को चित्रित किया है।
असमर्थदाता कहानी में बाबा नागार्जुन ने भिक्षावृत्ति की समस्या को दिखाया है, जो मुख्य रूप से आर्थिक समस्या है। नागार्जुन ग्रामीण परिवेश से अच्छी तरह प्रेरित थे। वे स्वयं भी एक ग्रामीण किसान के पुत्र थे। उनका बचपन भी निम्न जाति के हमउम्र ग्रामीण लडकों के साथ बीता था, यही कारण है कि उन्होने भोगा, तथा अनुभव किया हुआ प्रत्येक क्षण अपनी रचनाओं के माध्यम से चित्रित किया। नागार्जुन के मन में शोषित-पीड़ित ग्रामीण संस्कृति के लोगो के प्रति सहानुभूति जागी। उसके मन में सामाजिक, धार्मिक, कुरीतियों तथा सामाजिक आर्थिक विषमताओं एवं धार्मिक आडम्बरों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई, और उन्होंने इन समस्याओं को दूर करने का प्रयत्न किया। इन सभी कुरीतियों को उन्होने अपने कथा साहित्य के माध्यम से सामान्य जन को समझाने का प्रयास किया।
नागार्जुन ने अपनी कहानियों के माध्यम से बताया कि किस तरह विषम- ज्वर कहानी में कर्मचारी-वर्ग कैसे आर्थिक विषम परिस्थितियों से जूझ रहा है। छोटे ग्रामीण परिवेश के छोटे कर्मचारियों के जीवन संघर्ष को यह कहानी उद्घटित करती है। निम्नवर्ग तथा कर्मचारी वर्ग का यथार्थवादी दृष्टिकोण नागार्जुन ने चित्रित किया है। उनका दुःख समूची पीड़ित मानवता का दुःख है। नागार्जुन की कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास लाखों करोड़ो की जिन्दगी के बारे में हैं।
''प्रेत का बयान'' कविता में प्राईमरी स्कूल के एक मास्टर का बयान न होकर, भारतीय ग्रामीण के उन लोगो की दुःख भरी कहानी है जो गरीबी के नीचे रहकर जीवन यापन करते हैं और भूखे रहकर जिन्दा बने रहते हैं। नागार्जुन जनजीवन के एकाएक निकट दिखाई देते है। उनकी भाव-भूमि जनता की भाव-भूमि बन गई है। उसमे भूख, बाढ़, अकाल, अत्याचार शोषण एवं इन सबके विरोध के वर्णन भरे पड़े है। भारत गांवों का ही देश है। स्वतंत्रता के बाद भी अशिक्षा, अभाव, अन्धविश्वास, बेकारी, भुखमरी ग्रामीण संस्कृति के लोगो में बढ़ती गई। जमींदारी समाप्त हुई तो सरपंच, पटवारी, पूंजीपति, साहुकार शोषक बन बैठे। इन सभी का चित्रण नागार्जुन ने अपनी रचनाओं में किया।[9]

बाबा नागार्जुन एक प्रगतिशील कथाकार हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में ग्रामीण संस्कृति को अनुभवों के आधार पर प्रस्तुत किया है बाबा नागार्जुन ने आम-आदमी के साथ सुःख-दुःख में अपनी भागीदारी निभाई। वे भारतीय ग्रामीण जीवन की भुखमरी, गरीबी और बेराजगारी को देखकर तड़प उठते हैं। नागार्जुन ने देश के अंचल की लोक संस्कृति को अभिव्यक्त किया है, चाहें वे किसान हों, या मजदूर हों या जमीदार सभी के चरित्र को उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से चित्रित किया।

नागार्जुन भारतीय ग्राम्य जनजीवन की परम्पराओं, रीति रिवाजों, वृत, त्योहारों लोक मान्यताओं आदि को अपने उपन्यासों, कहानियों का विषय बनाया। ''बलचनमा'' उपन्यास में उन्होंने बहुआयामी दृष्टिकोण का परिचय

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

दिया है इसमें दरभंगा जिले की तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक प्रवृत्तियों का चित्रांकन किया है। इसमें ग्राम्य जीवन का प्रभावकारी यथार्थ प्रस्तुत किया है।

गांव का जीवन टूट रहा है, गांव जीविका की तलाश में शहरों में समा रहे हैं।

बाबा नागार्जुन ने कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र एवं आंचलिक कथा सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु से प्रभावित होकर व्यक्तिगत जीवन की अनुभूतियों के आधार पर उपन्यासों एवं कहानियों का सृजन किया उन्होने जन-सामान्य के बीच रहकर समाज में घटित राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक घटनाओं को गहराई से देखा परखा इसलिये उनकी रचनाओं में कृषक एवं ग्रामीण अंचल की समस्याओं का चित्रण मिलता है।

इनकी रचनाओं में जमींदारों की तानाशाही उनका अन्याय एवं शोषण की प्रवृत्ति और उनके द्वारा व्यवहार किये जाने वाले ग्रामीणों और कृषको के प्रति स्वर मुखरित हुए हैं। इस अन्यायी व्यवस्था के प्रति उनकी कथाओं के पात्रों में क्रोध और आवेश, प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित हुए हैं। बाबा नागार्जुन के उपन्यास साहित्य की कथा-भूमि ग्रामीण क्षेत्र रहे हैं। उन्होने गांव के निम्न वर्गीय पात्रों को अपने उपन्यासों, कहानियों में स्थान दिया। नागार्जुन एक प्रगतिशील कथाकार हैं, उन्होंने आम जनता के जीवन को स्वयं भोगा ही नहीं बल्कि उसके प्रत्यक्षदर्शी भी रहे हैं।

उन्होने अपने कथा-साहित्य के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन के यथार्थ को चित्रित किया। लोक-संस्कृति का रूपायन नागार्जुन ने विशेष रूचि से किया। उन्होने आंचलिक समाज और जीवन निधि का यथार्थ ज्यों का त्यों दर्शन कराया। साथ ही सांस्कृतिक दशा से भी परिचित कराया है। नागार्जुन ग्रामीण संस्कृति का परिचय इस प्रकार कराते हैं कि ''जब ग्रामीण बहुत खुश होते हैं, तो वह अपनी प्रसन्नता गुनगुनाने के रूप में व्यक्त करते हैं। ग्रामीण परिवेश में पनपे नागार्जुन सर्वहारा के पक्षधर थे। ग्रामीण परिवेश की पीड़ापरक स्थिति को देखकर व्यथित हो उठे।

नागार्जुन कहते हैं:- निर्धन सामान्य जन का जीवन तो अभावग्रस्त होता है, उस पर यदि अकाल की छाया मंझरा उठे तो वह बहुत दर्दनाक हो उठता है। इसी का सजीव वर्णन नागार्जुन ने अपनी कविता ''अकाल और उसके बाद'' में किया है।[10]

नागार्जुन वर्तमान विषमता से सतत संघर्षशील रहने की प्रेरणा देते हुए भविष्य की मंगल आशा और आस्था को टूटने नहीं देते। नागार्जुन समय की प्रत्येक गति को परखते रहे हैं, युग की हर स्थिति को जाँचते रहे हैं। उनके लेखन की सम-सामायिक चेतना अति विशिष्ट है। फिर चाहें वे जन-पीड़ा हो, जन समस्याएँ हों, भूख बेकारी, आकाल की पीड़ा हो, ग्रामीण परिवेश हो, मंहगाई, भष्टाचार हो अथवा परिवेशगत कोई भी स्थिति या यथार्थ हो किसी न किसी रूप में उनके कथा-साहित्य में उभरा है।

(क) नागार्जुन के उपन्यास और ग्रामीण संस्कृति

बाबा नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण संस्कृति को सहज रूप में प्रस्तुत किया है। ''बलचनमा'' उपन्यास में शादी तथा विदाई का दृश्य है जो गांवों की लोक-संस्कृति की अनूठी झलक लिये हुए है। इसी उपन्यास में ग्रामीण संस्कृति का और-और दृश्य है, जिसमें खेती में लगने वाली साग-सब्जी तथा अन्य वस्तुओं की ताजी-ताजी खुश्बू कृषक को मदमस्त कर देती है।स्वतंत्रता प्राप्ति से जुड़े अनेक आन्दोलनों और उससे जुड़ी ग्रामीण राजनीतिक स्थिति का चित्रण नागार्जुन ने इस उपन्यास में किया है। इस उपन्यास में गरीबी, भुखमरी, तथा लाचारी का वर्णन किया गया है।

''बलचनमा'' उपन्यास का एक कथन इस प्रकार है - '' सुना है मेरा बाप दोपहर के समय बाग से दो किसुनभोग तोड़ लाया था। तोड़ते तो किसी ने देखा नहीं, मगर पुराने बखारों की ओट में बैठकर जब वह आम के छिलके उतार रहा तो किसी ने देख लिया और मालिक से चुगली कर दी, फिर क्या था मालिक आग-बबूला हो गया और बापू को पीटते-पीटते मार डाला। बाबू जी मरे तब उसी समय दादी को चैठाईया बुखार लगा हुआ था। कुछ मालिक से कुछ उधार लेकर जैंसे-तैसे क्रियाकरम हुआ। उसके बाद

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

दादी और मां की राय हुई कि मैं मालिकों की किसी पटटी में चरवाहे का काम करूँ। दादी ने मना भी किया कि अभी खाने खेलने के दिन हैं, इसी समय जोत देगी तो गला सूख जायेगा। इस पर मां बोला थी कि अभी से पेट की फिकर नहीं करेगा तो लापरवाह हो जायेगा।''[1]

बलचनमा स्वयं एक ग्वाला था लेकिन उसके घर में दूध दही नाम मात्रा को भी नहीं थे। बलचनमा को अपने पिता के हत्यारों के घर में ही नौकरी करनी पड़ी। इसी मजबूरी और लाचारी को बाबा नागार्जुन ने इस उपन्यास के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के माध्यम से स्वाधीनतापूर्व जमींदारों के शोषण और दमन का चित्रण बड़े ही बारीकी से दिखाया है। मिथिला ग्रामीण जीवन का उत्कृष्ट यथार्थ अपनी इस रचना में नागार्जुन ने सम्पूर्ण प्रखरता के साथ चित्रित किया है। बलचनमा गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित तो रहता ही है साथ-ही साथ खेलने कूदने के दिनों में जमींदारों के यहां मजदूरी करने पर विवश है। ''बाबा बटेसरनाथ'' इस उपन्यास में बाबा नागार्जुन ने ग्रामीण संस्कृति तथा अंचालिक आर्थिकता का भरे पूरे खुशहाल घर का एक दृश्य है, जिसमें थोड़ी समझबूझ और चतुराई से किस प्रकार परिवार सम्पन्न हो सका उसी का चित्रण किया है।[11]

यह उपन्यास ग्राम्य जीवन में उत्थान, पतन एवं परिवर्तन का सामाजिक यथार्थ निरूपित करता है। इसको ''बलचनमा'' का पूरक भी कह सकते है। बाबा एक पुराने वटवृक्ष का मानवीय रूप है। गांवो में पनप रही गरीबी, अशिक्षा अन्धविश्वास आदि समस्याएँ ग्रामीणों के शोषण का एक बड़ा कारण बन जाती है। ये शोषणकर्ता होते हैं जमीदार, स्थानीय नेता, सेठ, साहूकार आदि। ग्रामीण जीवन के सुःख दुःख रूदन और अभाव अभियोगो का इसमें बड़ा ही सहज मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। यह रूपाली गांव की कथा है। जमींदार उन्मूलन से सम्बन्धित है। आजादी से पहले तथा बाद की कहानी इस उपन्यास मंे बताई गई है यह आंचलिक उपन्यास है। स्वतंत्रता के पहले भारतीय राजनीति में किसका दबदबा था उसका उल्लेख इस उपन्यास में हुआ है। अंग्रेजो की साम्राज्यवादी नीति के चलते सारे देश में उथल-पुथल मची हुई थी। चारों ओर उत्पीडन, एवं शोषण का साम्राज्य छाया हुआ था। इस उपन्यास मे स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का योगदान दिखाया गया है। अंग्रेजो ने भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करके भारत का शोषण करना शुरू कर दिया था। बाबा बटेसरनाथ किसी व्यक्ति का नाम नहीं है। यह एक वृक्ष का नाम है जो हमारे सामने प्रतीक के रूप में है।जमींदारों ने किसान एवं मजदूरों का जमकर शोषण किया उनकी जमीनें हड़प लीं, उनके घर एवं जायदाद पर अधिकार कर लिया। बाबा बटेसरनाथ उपन्यास का कथन है - '' सौ वर्ष पहले दसअसल अपने इन इलाकों में जमींदार सर्वेसर्वा हुआ करता था। रिआया से बेगार लेना उसका सहज अधिकार था। वह रोब वह दबदबा, वह अकड़, वह जोर जुल्म क्या बताऊँ बेटा? छोटी औकात नीची जात के लोगों को यह कीड़े-मकोड़े समझता ही था। लेकिन अच्छी हैसियत के भले व्यक्तियों से वक्त बे वक्त नाक रगड़वाता था जमीदार।

रतिनाथ की चाची

इस उपन्यास में नागार्जुन ने भारतीय समाज में अपमानित, तिरस्कृत, यातनापूर्ण जीवन जीने वाली स्त्रियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। नागार्जुन की मुख्य विशेषता या समस्या नारी की पराधीनता से मुक्ति है, और वे नारी के आत्मनिर्भर होने की कल्पना करते हैं। सम्पूर्ण हिन्दी कथा साहित्य में नारी के पराश्रित होने की दशाओं का मार्मिक चित्रण किया गया है। नागार्जुन के उपन्यासों में उपेक्षित या पिछड़े हुए मैथिल ग्रामीण अंचल के लोगो की सामाजिक आर्थिक संघर्ष की, उत्पीड़न और शोषण के विरूद्ध जन आन्दोलन की, किसानों मजदूरों के संघर्ष की, कथा कहना ही नागार्जुन का मुख्य उद्देश्य है।

नागार्जुन ऐसे ही उपन्यासकार हैं, जिनका देश की समसामयिक राजनीतिक से गहरा सम्बन्ध रहा है। नागार्जुन के उपन्यासों में राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की यथार्थ अभिव्यक्ति मिलती है। गाँवों की पुरातन गरीबी और देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के विकसित वैभव में कोई सम्राज्य प्रतीत नहीं हो रहा था जिसका नागार्जुन के उपन्यासों को पढ़कर अवलोकन कर सकते हैं। रचनात्मक स्तर पर जीवन के अनुभवों से मूल्यों की तलाश करना व समाज की अमानवीय, शोषणकारी व दमनकारी परिस्थितियों को ढूँढना पहचानना यही अर्थ था बाबा नागार्जुन के लेखन का।रतिनाथ की चाची में विधवा जीवन के अभिशाप और सामाजिक मान्यताओं के अनुसार अवैध रूप से प्रताड़ना को झेलती स्त्री का चित्रण है।[12]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

इस उपन्यास का एक कथन दृष्टव्य है '' मैंने अपना सब कुछ जिसे सौंप दिया था, उस आदमी का दिल बहुत बड़ा है। पराये गर्भ को ढोने वाली अपनी प्रेमिका को फिर से, बिना किसी हिचक के उसने स्वीकार कर लिया है। उसने मुझसे शादी कर ली है।''[1]

नागार्जुन ने ब्राहम्ण समाज में विधवाओं की दुर्दशा का यथार्थवादी चित्रण किया है। नागार्जुन इस उपन्यास के माध्यम से बताना चाहते है कि पढ़-लिखकर स्त्रियां अपना जीवन ही नहीं सुधार पायेंगी बल्कि बेहतर समाज का निर्माण करेगी।

''नई पौध'' उपन्यास में नागार्जुन ने नई पीढ़ी के माध्यम से नई चेतना का विकास दर्शाया है। अन्याय एवं अत्याचार पर विजय को दिखाया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषक जमींदारों के अत्याचारों और शोषण से मुक्ति पाने के लिये संगठन बनाने लगे। उनमें नई सामाजिक चेतना का उदय हुआ। इस उपन्यास में गाँव के बड़े बुजुर्गो द्वारा बेमेल शादी के विरोध में युवाओं के उठ खडे होने की घटना है। इसमें बेमेल विवाह की समस्या है, जो हमारे ग्रामीण समाज में आज भी विकराल रूप में मौजूद है इस समस्या का समाधान नई पीढ़ी ही दे सकती है। ''नई पौध'' उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या इस प्रकार है - ''आखिर एक दिन यह अफवाह उड़ गई कि आज शाम को खोंखा पंडित सौराठ से दूल्हा ला रहे हैं। शक्ल सूरत तो उसकी ठीक है, मगर उम्र अधिक है, बहुत बड़ा काश्तकार है। वह पांचवी बार दूल्हा बन रहा हैं।''[1]

गाँव के प्रगतिशील युवक इस विवाह का विरोध करते हैं और सफल भी हो जाते हैं नागार्जुन अनमेल विवाह का प्रमुख कारण ग्रामीण अंचल की आर्थिक दशा को मानते हैं। मिथिला जनपद के सौराठ में शादी के उम्मीदवारों का मेला लगता है। वहाँ पर नवयुवतियों का विवाह बूढ़े लोगो से करवा देते हैं। नागार्जुन ने भारतीय ग्रामीण समाज में व्याप्त कुरीतियों को निकट से देखा पहचाना है और प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाते हुये इस समस्या का समुचित समाधान भी खोजा है। ''गरीबदास'' इस उपन्यास में नागार्जुन ने सर्वहारा निम्न वर्ग का यथार्थ जीवन प्रस्तुत किया है। अछूत और गरीब वर्ग पूरा जीवन अपमान तिरस्कार और लांछन सहता गुजार देता है। नागार्जुन ग्रामीण कृषकों और मजदूरों को जाति वर्ग आदि से ऊपर उठकर सामंती चेतना से निकलकर संगठित करना चाहते हैं। जमींदार वर्ग ने किसान काश्तकार और मजूदरों को भूमि लगान के रूप में प्रत्यक्ष रूप से शोषित बनाया, और अब वही तरीका बदलकर सूदखोरी के रूप से शोषण होने लगा। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया कि ग्रामीण अंचल के जो जमींदार थे उनके पैसे की मार भयाभय थी ही साथ ही शारीरिक मानसिक चोटों की यातना भी उस समय दुखी भरा कार्य था।

नागार्जुन स्वयं भी ऐसे वर्ग से आए है, जिन्होंने खुद गरीबी देखी-भोगी है। गरीबदास उपन्यास में लक्ष्मणदास एक हरिजन व्यक्ति है, जिसने बस्ती में एक स्कूल खोला। बाबा गरीबदास उसे चलाने के लिये अपनी आय में से हर महीने तीस रूपये देते रहे। इस प्रकार आंरभ होकर यह स्कूल किस तरह आस-पास के इलाके की गतिविधियों का केन्द्र बन जाता है, यही इस उपन्यास की विषयवस्तु है नागार्जुन ने बताया है कि इस उपन्यास के जरिये कि किस प्रकार अछूत वर्ग के समाज में सुखद परिवर्तन के साथ भावी समाज की रूपरेखा में एक सुन्दर समाज की कल्पना ही इस उपन्यास का आदर्श है।[9]

''उग्रतारा'' उपन्यास में नागार्जुन ने मूलतः अनमेल विवाह की समस्या को पुनः चित्रित किया है। यह एक वास्तविक घटना है। यह एक ग्रामीण क्षेत्र की कथा के रूप में सामने आता है। गाँव की एक लड़की है जो बाल विधवा हो गई है। उसको गाँव में एक प्रेमी मिलता है, जो गाँव में नहीं रह सकते और भाग जाते हैं। पुलिस उनको जबरदस्ती पकड़ती है और उर्दू का एक पर्चा लिखकर पुलिस उस लडके की जेब में डाल देती है और इल्जाम लगाया जाता है कि लडका युवती को भगाकर लाया है। लड़की को तीन महीने की जेल होती है और लड़के को नौ माह की।जब उगनी जेल से बाहर आती है तब उसका विवाह पचास साल के अधेड़ सिपाही से कर दिया जाता है। स्त्री-पुरूष के बीच उम्र का फासला किस तरह का माखौल उड़ा रहा था

नागार्जुन लिखते है- '' बाबु भभीखन सिंह को कानूनी तौर पर इस बलात्कार का हक हासिल हुआ। उगनी को घर वाला तो जरूर मिल रहा था, पति नहीं मिल रहा था। उगनी कामेश्वर से विवाह करके प्रगतिशीलता का परिचय देती है।''

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

बीच-बीच में पात्रों के अन्तर्द्वन्द को दिखाने के लिये इस उपन्यास में सरल शब्दों का प्रयोग हुआ जिससे पाठक इस कथा को आत्मसात कर सकें।

(ख) नागार्जुन की कहानियां एवं ग्रामीण संस्कृति-

बाबा नागार्जुन ने अनेक ग्रामीण संस्कृति पर अनेक कथाएँ लिखीं उनकी एक कहानी है। असमर्थदाता इसमें भिक्षावृत्ति को दिखाया गया है। नागार्जुन कथा साहित्य को यथार्थवादी जमीन पर खडा करने वाले तथा निम्न वर्ग के हितैषी लेखक थे।नागार्जुन की कहानियाँ पढ़ने के बाद ऐसा लगता है जैंसे उन्होंने अपने अनुभवों को घटनाओं को चुनकर कहानियों का रूप दिया। असमर्थदाता कहानी का मुख्य विषय आर्थिक स्थिति है। इनकी कहानियांे में ग्राम्य जीवन की विसंगतियां, विषमताएं बडी मार्मिकता से चित्रित हैं।

असमर्थदाता कहानी का कथन- ''बाबू जी, बाबू जी!'' हैं, यह क्या ? मैने पीछे मुड़कर देखा तो एक नौ दस साल की मैली कुचैली लड़की मेरे कुर्ते का पिछला पल्ला पकडकर गिड़गिड़ारही थी। बाबू जी एक पैसा! मेरी मां अन्धी .... कहती जा रही थी और मैं उससे पिण्ड छुड़ाने के लिये बहाना ढूढता जा रहा था। हट जा दूर हो। इस तरह अपनी रंजीदगी तो जाहिर की, लेकिन यह साहस नहीं हुआ कि उसे झकझोर कर आगे बढ़ जाऊं।[1]

''भूख मर गई थी'' यह कहानी भी भिक्षावृत्ति पर ही आधारित है। इस कहानी को पड़ने के बाद भिक्षावृत्ति की प्रवृत्ति के अन्तर को समझा जा सकता है। इस कहानी में बूढ़े पात्र को भिखारी की हालत में पहुँचाने में उसकी आर्थिक परिस्थितियाँ ही प्रमुख कारण रहीं। इस दृष्टि से यह कहानी पाठक पर गहरा प्रभाव डालती हैं और बूढ़े व्यक्ति के प्रति सहानुभूति, दया, उत्पन्न करती है। यहां नागार्जुन ने यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया है। ''ममता'' कहानी में मातृहीन लडके का अपनी चाची के प्रति स्नेह और वात्सल्य दिखाया गया है। ये कहानी मानवीय और सामाजिक समस्या के विभिन्न पहलुओं को उदघाटित करती है। नागार्जुन द्वारा रचित ममता कहानी का कथन इस प्रकार है - ''मां की शक्ल-सूरत याद आते ही बुलो का कलेजा फटने लगा। माथें को घुटनों के बीच डालकर बुलो रोने लगा। बुलो ने धोती के खूंट से अपने आंसू पोंछे।[1]

''जेठा'' कहानी का जेठा अपनी मौसी के पास रहता है इस कहानी में पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। नागार्जुन ने उत्तरी बिहार के दरभंगा जिले के ग्रामांचल को लेकर कहानियाँ लिखीं। कहानियों में ग्रामीण जीवन की विसंगतियाँ विषमताएँ बड़े ही सहज रूप से चित्रित की गई हैं। नागार्जुन द्वारा लिखी गई कहानियाँ बिहार प्रान्त के लोक जीवन की सच्ची तस्वीर खींचती हैं।[8]

''कायापलट'' कहानी को नागार्जुन ने आजादी के बाद की ग्रामीण समस्या से उठाया है। भारतीय नवयुवकों के लिये कहानी एक आदर्श के रूप में चित्रित हुई।ये कहानियाँ ग्राम्य जीवन सन्दर्भ और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाती हैं। नागार्जुन का उद्देश्य सामाजिक, अंतर्विरोधों की यथार्थ अभिव्यक्ति और उन समस्याओं से संम्बन्ध स्थापित करना है।

बाबा नागार्जुन ने ऐतिहासिक कहानियां भी लिखीं हैं- विशाखामृगारमाता तथा हर्षचरित्र का पाकेट एडिशन, बुद्धकालीन सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का परिचय देती हैं।

नागार्जुन की कहानियाँ संवेदना और विषय-वस्तु की दृष्टि से साधारण हैं जो पाठक के हृदय को भाव-विभोर कर देती हैं। समकालीन जीवन संदर्भ और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाती हैं। नागार्जुन एक प्रगतिवादी कवि हैं। वह शोषण का विरोध करते हैं।

नागार्जुन साहसी, निर्भीक, उग्र हैं। उन्होंने जेल यात्राएँ भी की हैं। यातनाऐं भी सही हैं। अपने अंचल के प्रति एक गहरी आत्मीयता और परिवेश की निकट पहचान का भाव ही नागार्जुन के उपन्यासों का सबसे बडा आकर्षण है। उनकी कहानियों में भी वेदना, पीड़ा के स्वर मुखरित होते हैं। भारत की जनसख्यां का अधिकांश भाग ग्रामवासी है। फलतः भारतीय गाँव विभिन्न राजनीतिक दलों के आकर्षण केन्द्र हैं। राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले चुनावों में अधिक से अधिक मतों की प्राप्ति इन्हींक्षेत्रों से होती है। भारतीय गाँव

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

राजनीतिक दलों के मजबूत गढ़ बन चुके हैं। बाबा नागार्जुन स्वतन्त्रोत्तर हिन्दी के आंचलिक कथा साहित्य के सफल कथाशिल्पी हैं। उनके द्वारा रचित कथाकृतियाँ बिहार प्रदेश गाँव परिवेश की तस्वीर खींचती हैं।[7]

''आसमान में चन्दा तेरे'' नामक कहानी संग्रह में संग्रहित नागार्जुन की कहानियाँ आज के समाज के विविध परिदृश्य को प्रस्तुत करती हैं। प्रगतिशील चेतना से सम्पन्न कथाकार नागार्जुन कविता, उपन्यासों की तरह कहानियों में भी जन-सामान्य की बात करते हैं। उनकी सामाजिक विषमताओं अन्र्तविरोधों को अपनी कहानियों में अभिव्यक्त करते हैं। उन्होंने ग्रामांचलों की प्राकृतिक पृष्ठभूमि और भोगैलिक विविधता में मानवीय भावों और विचारों को वाणी प्रदान की।प्रेम, उत्पीडन, शोषण और क्रान्ति के जीवन पटल पर ग्रामीण पात्र उपस्थित हुए हैं। समाज तथा देश के विभिन्न अंगों में विद्यमान पाखण्ड, छल छदम तथा रूढ़िवादी मान्याए एवं अंधानुकरण पर वह डटरकर प्रहार करते हैं। नागार्जुन ने बदलते हुऐ मानवीय जीवन के मूल्यों को भी अपने उपन्यासों, कहानियों का विषय बनाया। आज की वर्तमान समस्याओं एवं समाज की संक्रमणशील सामाजिक स्थितियों के चित्रांकन करने में बाबा नागार्जुन अग्रणिम हैं। उन्होने जनता को जागरूकता आत्मशक्ति का विकास किया। नागार्जुन की दलितों के प्रति पक्षधरता, नारी के प्रति मर्यादा यथार्थ की अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में चित्रित हुई हैं। नागार्जुन ने तथ्यों को आसानी से भांपा है। आर्थिक आजादी न मिलने का नतीजा गाँव के मजदूर किसानों को कैसे झेलना पड़ता था उसका चित्रण नागार्जुन ने अपनी रचनाओं में किया। नागार्जुन ने जनता के संघर्ष को अपने देश की माटी से जोड़ने की और सामान्य लोगों के सामान्य दुःख-दर्दो की प्रभावशाली अभिव्यक्ति की नागार्जुन ने अपने कथा साहित्य में सामाजिक आर्थिक रूढ़ियों, अंध विश्वासों पाखण्डों गली-खडी पुरातन पंथी परम्पराओं को अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से पाठकों के सम्मुख रखकर उससे जनता को अवगत कराया। इससे दलित व्यक्ति या समाज में चेतना की लहर दौड़ गई।

परिणाम

बेबस किसान, अनमेल विवाह और दहेज़ प्रथा के बीच झुंझलाती भारतीय महिला, हर दिन ज़हर के समान अस्पृश्यता का घूंट लगाते दंपति, बेटे का सुख ना दे पाने के कारण लज्जित होती माँ, भ्रष्ट अधिकारियों के बीच ईमानदार दारोगा, असामान्य स्थितियों को संभालती बड़े घर की बेटी जैसे कई पात्रों से अपनी कहानियां गढ़ने वाले हिंदी साहित्य के महान शिल्पकार थे मुंशी प्रेमचंद। ये पात्र हमारे जीवन से कुछ अलग नहीं हैं। ये कहानियां हमारी कहानियों से जुदा नहीं हैं। इसलिए भी इन कहानियों से जुड़ पाना आसान होता है। सीधे प्रेमचंद की कहानियों पर बात करने से पहले हमें उस समय के सामाजिक परिदृश्य को समझना भी बहुत ज़रूरी है। हमें समझना होगा, उन परिस्थितियों को जिन्होंने उनके लेखन को इस कदर प्रभावित किया। 'सोज़-ए-वतन' नाम से नवाबराय यानी प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह 1907 में प्रकाशित हुआ था। यह बात काबिले गौर है कि यह वही समय था, जब देश में सामंतवाद और ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आज़ादी की लड़ाई अपने चरम पर थी। यही वजह है कि इस संग्रह की कहानियों में प्रेमचंद का देशप्रेम भी झलकता है लेकिन हमीरपुर के ज़िला कलेक्टर ने इस कहानी संग्रह को देशद्रोही करार दिया और इसकी सारी प्रतियां जलवाकर नष्ट करवा दीं। इस घटना से उन पर और उनके लेखन पर कोई खास असर नहीं पड़ा। इस वाकये के बाद नवाबराय से, वे प्रेमचन्द हो गए और कई कहानी और उपन्यास इसी नाम से हिंदी साहित्य में लिखे।[6]

प्रेमचंद अपनी कहानी 'नैराश्य' में दर्शाते हैं कि हमारे समाज में लड़कियों के जन्म में तथाकथित पिछले जन्म के पाप का बिल्ला टांग दिया जाता है। यह जानते हुए भी कि बच्चे के लड़के या लड़की के रूप में पैदा होने में माता-पिता दोनों ही बराबर ज़िम्मेदार होते हैं फिर भी हमारे समाज में महिलाओं को ही लड़की पैदा करने का कसूरवार ठहराया जाता है। इस कहानी की मुख्य पात्र निरुपमा के सर भी लगातार 3 लड़कियां पैदा करने का इल्ज़ाम मढ दिया जाता है। यह कहानी केवल एक निरुपमा की नहीं है बल्कि यह हर उस निरुपमा की कहानी है, जो हमारे आसपास अभी भी समाज में मौजूद लड़कियों के प्रति हीन मानसिकताओं का शिकार है।प्रेमचंद की कहानियों के पात्रों के नाम भी अपने आप में समाज के लिए भी अनोखे प्रतीक हैं। उन्होंने ज़्यादातर उन नामों को तवज्जो दी है, जो दबे-कुचले वर्ग के लोगों के माने जाते हैं। होरी, धनिया, गोबर, गंगी, घीसू, हलकू, दुखी जैसे पात्रों से प्रेमचंद ने कहानियां लिखीं। उन्होंने सदियों से दबाई जा रही दलितों और महिलाओं की आवाज़ को बुलंद किया। समाज में परम्पराओं के नाम पर प्रचलित तमाम तरह की रूढ़ियों और हीन मानसिकता से लैस हमारे समाज की उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से कटु आलोचना की। आधुनिक भारतीय साहित्य के महान हिंदी उपन्यासों में से एक 'गोदान' ग्रामीण समाज और कृषि जीवन को मार्मिक ढंग से पाठक के सामने रखता है। वहीं 'नमक का दारोगा' कहानी के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने सरकारी विभागों में फैले भ्रष्टाचार पर तीक्ष्ण चोट की है। इस रचनाकार ने महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर बढ़-चढ़कर अपने विचार व्यक्त किए।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 3, May 2018 |

एक ओर तो उन्होंने अपनी कहानी 'बड़े घर की बेटी' के माध्यम से स्पष्ट किया है कि किसी भी घर में पारिवारिक शांति और सामंजस्य बनाए रखने में घर की स्त्रियों की अहम भूमिका होती है। वहीं दूसरी ओर 'निर्मला' नामक उपन्यास में निर्मला के माध्यम से भारत की मध्यवर्गीय युवतियों की दयनीय हालत का चित्रण भी किया है, जो अनमेल विवाह और दहेज़ प्रथा की मार झेल रही हैं। प्रेमचंद का आरंभिक कथा-साहित्य कल्पना, संयोग और रूमानियत के ताने-बाने से बुना गया है, लेकिन एक कथाकार के रूप में उन्होंने लगातार इस विधा का विकास किया और वे सामाजिक जीवन को कहानी का आधार बनाने वाली यथार्थवादी कला के अग्रदूत के रूप में सामने आए। उन्होंने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से आलोचनात्मक यथार्थवाद तक की विकास-यात्रा की। आज़ादी की बात भी हाकिम का मुंह देखकर कहने का उन दिनों रिवाज़ था। कुछ लोग थे, जो इस रिवाज़ को नहीं मानते थे। मुंशी प्रेमचंद भी उन्हीं सिरफिरों में से एक थे। अपने लेखन के आखिरी वर्षों तक आते-आते उन्होंने अपने लेखन में कठोर वास्तविकता को प्रस्तुत करने में स्थितियों से जरा भी समझौता करना वाजिब नहीं समझा। इस तरह धनपत राय से नवाब राय और फिर मुंशी प्रेमचंद बनने तक की यात्रा में वे कई हज़ारों लोगों की आवाज़ बने और अपना हिंदी साहित्य के इतिहास में विशेष स्थान अपने नाम कर गए।[5]

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बाबा नागार्जुन एक प्रगतिवादी लेखक है। समाज में चारों ओर व्याप्त विकृतियों को देखा। उसी को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। नागार्जुन ने शोषित, पीड़ित ग्रामीण संस्कृति के जन सामान्य के प्रति सहानुभूति प्रकट की। उनके उपन्यासों में कहानियों में आम जनता का दुःख दर्द चित्रित हुआ है। नागार्जुन के कृतित्व-व्यक्तित्व के अन्तर्गत उनके उपन्यासों का ऐसा चित्रण सामने आता है जो पाठक को जनजीवन के अत्यन्त निकट ले जाता है। नागार्जुन ग्रामीण अंचल की कुरीतियां, अंधविश्वास, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का यथार्थ रूप अपने कथा-साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। वे सामान्य जन तथा पाठक को इन समस्याओं से अवगत कराते हैं।ग्रामीण परिवेश में पनपे बाबा नागार्जुन सर्वहारा के पक्षधर थे। अकाल की पीड़ा, महंगाई, भ्रष्टाचार, परिवेशगत कोई भी स्थिति या यथार्था किसी न किसी रूप से उनके साहित्य में उभरा।ग्रामांचलों की उनकी सभी विशेषताओं के साथ साहित्य में स्थान प्राप्त हुआ है। नागार्जुन के उपन्यास तथा कहानियाँ ग्रामीर्ण अंचल के मानव-अनुभवों एवं सत्य का आंकलन करते हैं। नागार्जुन स्वयं ग्रामीण अंचल से थे, इसलिये उनके कथा साहित्य में ग्रामांचलों का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। सभी समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत करना नागार्जुन के लेखक कार्य की प्रमुख विशेषता है। वे न शासन से डरते थे न शोषक से। स्त्री समस्याओं का भी नागार्जुन ने यथार्थवादी चित्रण किया है।लोक संस्कृति का रूपायन नागार्जुन ने विशेष रूप में किया है। उनके लेखन कार्यो में ग्रामीण अंचल के लोग ही विषय केन्द्र रहे, चाहें वे ग्रामीण कृषक हो या मजदूर, सभी के प्रति नागार्जुन ने सहानुभूति प्रकट की।उन्होने गाँव के निम्न वर्गीय पात्रों को अपने उपन्यासों एवं कहानियों का विषय बनाया। उन्होने न केवल सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया। बल्कि उसका समाधान भी प्रस्तुत किया।[12]

संदर्भ

1. नागार्जुन का रचना संचयन - राजेश जोशी-साहित्य अकादमी-नई दिल्ली 2017
2. आंचलिक उपन्यास और नागार्जुन - श्री जीवाभाइ परमार
3. नागार्जुन के उन्यासों की कथा भूमि - डां॰ प्रफुल्ल कुमार मिश्र-apnimaati.com/2014/08
4. लोक सरोकारों के कवि नागार्जुन -SRIJAN SHILPI – https//srijanshilpi.com/?p=75
5. लोक नागार्जुन (यात्री जी) कालजयी रचनाकार, विद्रोही कवि by Darbhanga Express – 20 May 2017
6. नागार्जुन - बलचनमा उपन्यास - प्रकाशक वाणी प्रकाशन- प्रकाशन वर्ष 2002pustak.org
7. नागार्जुन - बाबा बटेसरनाथ उपन्यास-premnarayan Pandey blogspot.com- 15 Sep. 2016
8. नागार्जुन - रतिनाथ की चाची उपन्यास - पृष्ठ सं 1 - प्रकाशन वर्ष 21 अगस्त 2012adhyakosh.org
9. नागार्जुन - नई पौध उपन्यास - पृष्ठ सं 30 - वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
10. नागार्जुन - उग्रतारा - पृष्ठ सं 35- वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
11. नागार्जुन - असमर्थदाता कहानी - पृष्ठ सं - 238 वाणी प्रकाशन दिल्ली
12. नागार्जुन - ममता कहानी - पृष्ठ सं. 253 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली